SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन

आशीष कुमार, (Ph.D.), शिक्षाशास्त्र विभाग,
भदावर विद्या मंदिर डिग्री कॉलेज, बाह, आगरा, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आशीष कुमार, (Ph.D.), शिक्षाशास्त्र विभाग,
भदावर विद्या मंदिर डिग्री कॉलेज, बाह,
आगरा, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 22/09/2021
Plagiarism : 09% on 15/09/2021

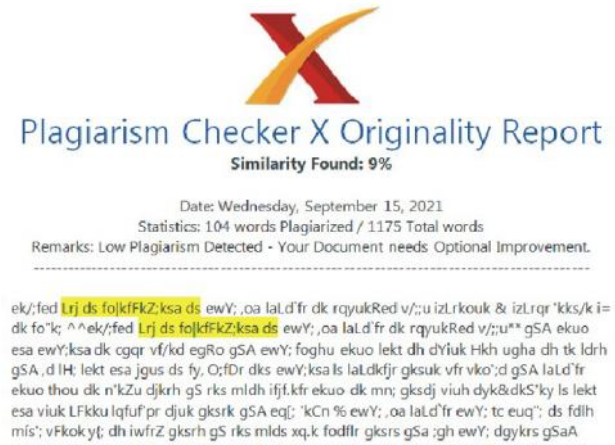
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Wednesday, September 15, 2021
Statistics: 104 words Plagiarized / 1175 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ek;fed Lrj ds fo|kfFkZ;ksa ds ewY; ,oa laLd`fr dk rqyukRed v/;;u izLrkouk & izLrqr 'kks/k i= dk fo"k; ^^ek;fed Lrj ds fo|kfFkZ;ksa ds ewY; ,oa laLd`fr dk rqyukRed v/;;u** gSA ekuo esa ewY;ksa dk cgqr vf/kd egRo gSA ewY; foghu ekuo lekt dh dYiuk Hkh ugha dh tk ldrh gSA ,d lH; lekt esa jgus ds fy, O;fDr dks ewY;ksa ls laLdkfjr gksuk vfr vko';d gSA laLd`fr ekuo thou dk n'kZu djkrh gS rks mldh ifjf.kfr ekuo dk mn; gksdj viuh dyk&dkS'ky ls lekt esa viuk LFkku lqfuf'pr djuk gksrk gSA eq[; 'kCn % ewY; ,oa laLd`fr ewY; tc euq"; ds fdlh mís'; vFkok y{; dh iwfrZ gksrh gS rks mlds xq.k fodflr gksrs gSa ;gh ewY; dgykrs gSaA

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का विषय ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन'' है। मानव जीवन में मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है। मूल्य विहीन मानव समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। एक सभ्य समाज में रहने के लिए व्यक्ति को मूल्यों से संस्कारित होना अति आवश्यक है। संस्कृति मानव जीवन का दर्शन कराती है तो उसकी परिणिति मानव का उदय होकर अपनी कला–कौशल से समाज में अपना स्थान सुनिश्चित करना होता है।

मुख्य शब्द

मूल्य एवं संस्कृति, मानव.

मूल्य

जब मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है तो उसके गुण विकसित होते हैं, यही मूल्य कहलाते हैं। मूल्यों का व्यक्ति के आचरण, व्यक्तित्व तथा कार्यों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

आज मूल्यों की शिक्षा की महती आवश्यकता है क्योंकि मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है और व्यक्ति कुंठित होता जा रहा है। वास्तव में जीवन मूल्य की यह अवस्था व्यक्ति को विनाश की ओर तेजी से ले जा रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में असंतुलन व किसी न किसी वस्तु का अभाव है और वह भयग्रस्त है और उसमें नकारात्मक भावनाओं ने अपना घर कर लिया है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आज मूल्यों के प्रति चिन्ता देखी जा रही है क्योंकि उनका पारिवारिक वातावरण उन्हें संस्कारवान बनने की प्रेरणा देकर उन्हें मूल्यों की रक्षा हेतु अग्रसर कर रहा है। किसी भी परिवार की अभिलाषा रहती है कि उसके बच्चे संस्कारित होकर अपने मूल्यों की रक्षा कर आदर्शों पर चल सकें। मूल्यों को दो भागों में बांटा गया है:

सकारात्मक मूल्य, जैसेः अहिंसा, शांति, धैर्य आदि।

नकारात्मक मूल्य, जैसेः हिंसा, अन्याय, कायरता आदि।

जे.काने के अनुसारः ''मूल्य वे आदर्श और विश्वास के आधार हैं जिनको एक समाज के अधिकांश सदस्यों ने ग्रहण कर लिया है।''

संस्कृति

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। वर्तमान समय में सभ्यता और संस्कृति को एक–दूसरे का पर्याय माना जाने लगा है। संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतम उपलब्धियाँ सम्मिलित हैं। भारतीय संस्कृति का विश्व में जो आदर और आकर्षण है, वह किसी से छुपा नही है।

भारत देश एक संस्कृति प्रधान देश है। यहां अलग–अलग प्रान्तों के लोगों की भाषाएं, रहन–सहन, खान–पान भले ही अलग हो परंतु अनेकता में एकता की भावना लिये हुए भारत के लोगों ने विश्व में अपनी संस्कृति की एक अलग मिसाल कायम की है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को परिवार व विद्यालय से जब मूल्यों की शिक्षा मिलती है तभी उनमें संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न होने लगती है और उसके सहारे वह अपने जीवन में आदर्श स्थापित करते हैं।

एम.पी. श्रीवास्तव के अनुसारः''संस्कृति का अर्थ मनुष्य का भीतरी विकास और उसकी नैतिक उन्नति है, एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार है और दूसरे समझने की शक्ति है।''

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की संस्कृति का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की संस्कृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

परिसीमन

1. शोध कार्य का क्षेत्र केवल आगरा नगर तक सीमित किया गया है।
2. शोध कार्य आगरा नगर के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित है।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु आगरा नगर के कुल 2 विद्यालयों को चयनित किया गया है, जिनमें 1 बालिका एवं 1 बालक विद्यालय है उनमें से 30 छात्र–छात्राओं को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों को प्रयोग किया गया हैः

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों के अध्ययन हेतुः डॉ. (श्रीमती) जी.पी. शैरी एवं डॉ. आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित 'व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली'।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की संस्कृति के अध्ययन हेतु–'एन. एस. चौहान' द्वारा निर्मित, सांस्कृतिक नियतत्व मापा'।

प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध में सांख्यिकीय के लिए एस.पी.एस.एस. का प्रयोग कर निम्नलिखित सांख्यिकी विधि प्रयुक्त की गई है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट

निष्कर्ष

परिकल्पना 1: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिक मान		टी–मान
मा. वि. के छात्र	09.56	5.62	28	0.01	2.76	0.63
मा. वि. की छात्राएं	10.62	7.30		0.05	2.05	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

28 स्वतंत्रता अंश पर गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.63 प्राप्त हुआ है जो कि प्रामाणिक स्तर के दोनों मानों से काफी कम है एवं असार्थक है। अतः परिकल्पना सत्य होती है। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में नैतिक मूल्य विकसित होते हैं और उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करते हैं। छात्राओं में मूल्यों का विकास छात्राओं से आंशिक रूप से अधिक है क्योंकि छात्राएं भावुक, संकोची होती हैं। छात्र–छात्रायें दोनों एक ही परिवेश में अध्ययन करते हैं तो उनके मूल्यों का विकास एक सा ही होता है अर्थात् माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की संस्कृति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	प्रामाणिक मान		टी–मान
मा. वि. के छात्र	11.52	5.30	28	0.01	2.76	1.66
मा. वि. की छात्राएं	09.64	3.02		0.05	2.05	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

28 स्वतंत्रता अंश पर गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.66 प्राप्त हुआ है जो कि प्रामाणिक स्तर के दोनों मानों से काफी कम है एवं असार्थक है। अतः परिकल्पना सत्य होती है। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की संस्कृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या

माध्यमिक स्तर छात्र–छात्राओं के मध्य संस्कृति में कोई भी अन्तर नहीं है यह सिद्ध हुआ है इसका कारण यही है कि छात्र–छात्राओं में सदैव भारतीय संस्कृति को साथ लेकर चलने की परम्परा है। विद्यार्थियों में धार्मिक विश्वास, बड़ों की आज्ञा का पालन पारिवारिक परम्पराओं के अनुसार जीवन निर्वाह करना पाया गया। विद्यार्थियों में निराश्रित, असहाय लोगों की सहायता करना, परिश्रम तथा ईमानदारी से ही कोई भी कार्य करना आदि पाया गया। छात्र और छात्राएं दोनों ही समान रूप से अपनी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

सुझाव

1. घर व विद्यालय में बच्चों में उच्च संस्कार सिखाना चाहिए।
2. बच्चों को धर्म में विश्वास जगाकर उन्हें ईश्वर में आस्था एवं मंदिर जाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
3. छात्र–छात्राओं में मूल्यों की शिक्षा की व्यवस्था सुचारू रूप से की जानी चाहिए।
4. विद्यार्थियों को संस्कृति का महत्व बताते हुए उसको संरक्षित करने का मार्गदर्शन शिक्षकों द्वारा किया जाना चाहिए।
5. अभिभावकों को बच्चों में नैतिक प्रशिक्षण में पर्याप्त दृढता रखना चाहिए।
6. समाज को विद्यार्थियों के लिए समय–समय पर सांस्कृतिक, उपदेशात्मक कार्यक्रम कराते रहना चाहिए ताकि बच्चों में मूल्यों के विकास के साथ–साथ संस्कृति को सहेजने की प्रेरणा जाग सके।

संदर्भ सूची

1. माथुर, तेजबहादुर, (1991), *"मूल्यों को सीखना–सिखाना"* नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (क्षेत्रीय महाविद्यालय, अजमेर)
2. माथुर, एस. एस., (2005), *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. बोहरा, वंदना, *''रिसर्च मैथडोलौजी,''* ओमेक्स पब्लिकेशन, अंसारी रोड़, नई दिल्ली 2007।
4. श्रीवास्तव, गौतम, *''भारतीय संस्कृति संरक्षण'',* महेश प्रकाशन, मेरठ।

****